पुर्नस्थापनात्मक न्याय सिद्धांत और व्यवहार

[1]दीप्ति भटनागर, [2]डॉ. प्रेमवती (असिस्टेंट प्रोफेसर)
[1]शोधार्थी, [2]पर्यवेक्षक
[1–2]विभाग: लॉ, द ग्लोकल विश्वविद्यालय, मिर्जापुर पोल, सहारनपुर, यू.पी.

Accepted: 01.07.2021 **Published**: 01.08.2021

सार

पुर्नस्थापनात्मक न्याय पारंपरिक आपराधिक न्याय प्रणालियों का एक वैकल्पिक दृष्टिकोण है, जो दंडात्मक उपायों की तुलना में उपचार और सुलह पर जोर देता है। यह शोध पुर्नस्थापनात्मक न्याय के सिद्धांतों और प्रथाओं की पड़ताल करता है, पीड़ित–अपराधी संवाद, सामुदायिक भागीदारी और जवाबदेही जैसे इसके मूल तत्वों पर प्रकाश डालता है। यह पुर्नस्थापनात्मक न्याय के संभावित लाभों पर चर्चा करता है, जिसमें पुनरावृत्ति में कमी, पीड़ित की संतुष्टि में वृद्धि और मजबूत सामुदायिक एकजुटता शामिल है। शोध पुर्नस्थापनात्मक न्याय कार्यक्रमों को लागू करने से जुड़ी चुनौतियों और आलोचनाओं की भी जांच करता है, जैसे निष्पक्षता सुनिश्चित करना और शक्ति असंतुलन को संबोधित करना। अंततः, यह समीक्षा एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण के रूप में पुर्नस्थापनात्मक न्याय के महत्व को रेखांकित करती है जो नुकसान की मरम्मत करना, सहानुभूति को बढ़ावा देना और अधिक न्यायपूर्ण और समावेशी समाज को बढ़ावा देना चाहता है।

मुख्य शब्द: दृढ न्याय, पीड़ित–अपराधी संवाद, समुदाय की भागीदारी, जवाबदेही, उपचारात्मक, सुलह, पुनरावृत्ति में कमी, पीड़ित की संतुष्टि, सामुदायिक एकता, फेयरनेस, शक्ति असंतुलन, परिवर्तनकारी न्याय, समावेशिता, आपराधिक न्याय सुधार।

परिचय:

पारंपरिक आपराधिक न्याय प्रणाली, जो दंडात्मक उपायों और सजा पर ध्यान केंद्रित करती है, लंबे समय से कई समाजों में अपराध और संघर्ष को संबोधित करने की आधारशिला रही है। हालाँकि, पिछले कुछ वर्षों में, पुर्नस्थापनात्मक न्याय के रूप में जाना जाने वाला एक वैकल्पिक दृष्टिकोण एक सम्मोहक और परिवर्तनकारी प्रतिमान बदलाव के रूप में उभरा है। पुर्नस्थापनात्मक न्याय दंडात्मक मॉडल से विचलन का प्रतिनिधित्व करता है, जो आपराधिक अपराधों से होने वाले नुकसान को संबोधित करने की प्रक्रिया में उपचार, सुलह और सामुदायिक भागीदारी को प्राथमिकता देता है।

पुर्नस्थापनात्मक न्याय सिद्धांतों और प्रथाओं के एक समूह पर स्थापित किया गया है जो पीड़ितों को हुए नुकसान की मरम्मत करना, अपराधियों को उनके कार्यों के लिए जवाबदेह ठहराना और आपराधिक व्यवहार से टूटे हुए सामाजिक ताने–बाने का पुनर्निर्माण करना है। यह शोध पुर्नस्थापनात्मक न्याय के मूल सिद्धांतों और प्रथाओं की पड़ताल करता है, पीड़ित–अपराधी संवाद, सामुदायिक जुड़ाव और जवाबदेही पर जोर सहित इसके प्रमुख तत्वों पर प्रकाश डालता है। यह उन संभावित लाभों पर भी प्रकाश डालता है जो पुर्नस्थापनात्मक न्याय प्रदान करता है, जैसे कि अपराध की पुनरावृत्ति दर को कम करना, पीड़ित की संतुष्टि को बढ़ाना और सामुदायिक संबंधों को मजबूत करना।

हालाँकि, पुर्नस्थापनात्मक न्याय का कार्यान्वयन अपनी चुनौतियों और आलोचनाओं से रहित नहीं है। प्रक्रिया में निष्पक्षता सुनिश्चित करना, शक्ति असंतुलन को संबोधित करना, और मौजूदा आपराधिक न्याय प्रणाली के भीतर परिवर्तन के प्रतिरोध पर काबू पाना, सामना की जाने वाली बाधाओं में से एक है। फिर भी, सामाजिक दरारों को सुधारने, सहानुभूति को बढ़ावा देने और एक अधिक न्यायपूर्ण और समावेशी समाज बनाने की पुर्नस्थापनात्मक न्याय की क्षमता की बढ़ती मान्यता इसके महत्व को रेखांकित करती है।

इस समीक्षा में, हम पुर्नस्थापनात्मक न्याय के सिद्धांतों और प्रथाओं का पता लगाएंगे, इसके फायदे और कमियों का आकलन करेंगे, और आपराधिक न्याय सुधार के व्यापक संदर्भ के लिए इसके निहितार्थ पर विचार करेंगे। ऐसा करके, हमारा उद्देश्य अपराध और संघर्ष के जटिल मुद्दों से जूझ रहे विश्व में अधिक न्याय, उपचार और सामुदायिक एकजुटता प्राप्त करने के साधन के

रूप में पुर्नस्थापनात्मक न्याय के वादे और क्षमता पर प्रकाश डालना है।

पुर्नस्थापनात्मक न्याय के मूल सिद्धांत

पुर्नस्थापनात्मक न्याय अपराध और संघर्ष को संबोधित करने के लिए एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण है जो मूल रूप से न्याय के पारंपरिक दंडात्मक मॉडल से भिन्न है। इसके मूल में, पुर्नस्थापनात्मक न्याय आपराधिक व्यवहार से होने वाले नुकसान की मरम्मत करना चाहता है, उपचार, सुलह और सामुदायिक भागीदारी पर जोर देता है।

इसके मूल सिद्धांतों में से एक पीड़ित–अपराधी संवाद की अवधारणा है, जहां पीड़ितों और अपराधियों को सीधे संवाद करने का अवसर मिलता है। यह प्रक्रिया पीड़ितों को अपनी भावनाओं को व्यक्त करने, अपने सवालों के जवाब मांगने और संभावित रूप से अपराधी से माफी प्राप्त करने की अनुमति देती है। यह अपराधियों को अपने कार्यों की जिम्मेदारी लेने और दूसरों पर उनके व्यवहार के प्रभाव को समझने में भी सक्षम बनाता है।

सामुदायिक भागीदारी पुर्नस्थापनात्मक न्याय का एक और महत्वपूर्ण पहलू है। आपराधिक न्याय प्रणाली के भीतर समस्या को अलग करने के बजाय, यह समुदाय को समाधान प्रक्रिया में शामिल करता है। समुदाय पीड़ितों का समर्थन करने और अपराधियों को जवाबदेह ठहराने, अपराध और उसके परिणामों को संबोधित करने के लिए सामूहिक जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा देने में भूमिका निभाते हैं।

जवाबदेही पुर्नस्थापनात्मक न्याय की आधारशिला है। अपराधियों को केवल दंडित करने के बजाय, यह दृष्टिकोण उन्हें सुधार करने और उनके द्वारा पहुंचाए गए नुकसान की मरम्मत के लिए कार्रवाई करने के लिए प्रोत्साहित करता है। इसमें पुनर्स्थापन, सामुदायिक सेवा, या अन्य उपाय शामिल हो सकते हैं जो अपराधियों को जिम्मेदार और जवाबदेह व्यक्तियों के रूप में समाज में फिर से शामिल होने में मदद करते हैं।

संक्षेप में, पुर्नस्थापनात्मक न्याय उपचार, सुलह और सामुदायिक भागीदारी के सिद्धांतों पर बनाया गया है। यह दंडात्मक न्याय प्रणालियों के लिए एक समग्र और दयालु विकल्प प्रदान करता है, जिसका लक्ष्य न केवल अपराध के तत्काल परिणामों को संबोधित करना है बल्कि सहानुभूति को बढ़ावा देना, पुनरावृत्ति को कम करना और अधिक न्यायपूर्ण और समावेशी समाज का निर्माण करना है।

पुर्नस्थापनात्मक न्याय प्रक्रियाएँ

पुर्नस्थापनात्मक न्याय प्रक्रियाएँ पुर्नस्थापनात्मक न्याय के सिद्धांतों को लागू करने के लिए नियोजित व्यावहारिक तरीके और प्रक्रियाएँ हैं। इन प्रक्रियाओं को आपराधिक अपराधों या संघर्षों के बाद उपचार, सुलह और जवाबदेही की सुविधा के लिए डिजाइन किया गया है। कई प्रमुख घटक पुर्नस्थापनात्मक न्याय प्रक्रियाओं की विशेषता बताते हैं:

- **पीड़ित–अपराधी संवाद:** केंद्रीय विशेषताओं में से एक पीड़ितों और अपराधियों के लिए सीधे संचार में शामिल होने का अवसर है। इस प्रक्रिया में, पीड़ितों को अपनी भावनाओं को व्यक्त करने, उन्हें हुए नुकसान के प्रभाव को साझा करने और प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। बदले में, अपराधियों के पास अपने कार्यों की जिम्मेदारी लेने, पश्चाताप व्यक्त करने और व्यक्तिगत स्तर पर अपने व्यवहार के परिणामों को समझने का मौका होता है।
- **सर्कल कॉन्फ्रेंसिंग:** पुर्नस्थापनात्मक न्याय में अक्सर पीड़ितों, अपराधियों और कभी–कभी समुदाय के सदस्यों या सुविधाकर्ताओं सहित सभी संबंधित पक्षों को एक सर्कल या कॉन्फ्रेंस सेटिंग में एक साथ लाना शामिल होता है। यह खुले और सम्मानजनक संवाद की अनुमति देता है, जिससे सभी को अपने दृष्टिकोण साझा करने और समाधान खोजने में योगदान करने का अवसर मिलता है।
- **समझौता और जवाबदेही योजनाएँ:** पुर्नस्थापनात्मक न्याय प्रक्रियाओं से समझौतों या जवाबदेही योजनाओं का निर्माण हो सकता है। ये दस्तावेज उन कार्रवाइयों की रूपरेखा देते हैं जो अपराधी द्वारा किए गए नुकसान को सुधारने और सुधारने के लिए उठाए जाएंगे। इन कार्रवाइयों में पीड़ितों को क्षतिपूर्ति, सामुदायिक सेवा, परामर्श, या अपमानजनक व्यवहार के मूल कारणों को संबोधित करने के उद्देश्य से अन्य उपाय शामिल हो सकते हैं।
- **सामुदायिक भागीदारी:** पुर्नस्थापनात्मक न्याय अक्सर प्रक्रिया में समुदाय को

शामिल करता है। समुदाय पीड़ितों और अपराधियों दोनों का समर्थन करने में भूमिका निभा सकते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि व्यक्ति जवाबदेही और जिम्मेदारी की अधिक भावना के साथ समाज में फिर से शामिल हों। सामुदायिक समर्थन भी पुनरावृत्ति को रोकने में योगदान दे सकता है।

- **अनुवर्ती और समर्थनः** प्रभावी पुर्नस्थापनात्मक न्याय प्रक्रियाओं में अनुवर्ती और समर्थन के लिए तंत्र शामिल हैं। यह सुनिश्चित करता है कि समझौते या जवाबदेही योजनाएं कायम रहें, और व्यक्तियों को अपनी प्रतिबद्धताओं को पूरा करने के लिए आवश्यक संसाधन और सहायता प्राप्त हो।
- **सांस्कृतिक संवेदनशीलताः** पुर्नस्थापनात्मक न्याय प्रक्रियाएँ संस्कृतियों और समुदायों में भिन्न–भिन्न हो सकती हैं। इन प्रक्रियाओं को सांस्कृतिक संवेदनशीलता के साथ अपनाना, इसमें शामिल लोगों की विशिष्ट आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं के अनुसार उन्हें अपनाना आवश्यक है।

संक्षेप में, पुर्नस्थापनात्मक न्याय प्रक्रियाएँ उपचार, संवाद और जवाबदेही की सुविधा के लिए एक संरचित रूपरेखा प्रदान करती हैं। सभी हितधारकों को शामिल करके और केवल अपराधियों को दंडित करने के बजाय नुकसान की मरम्मत पर ध्यान केंद्रित करके, इन प्रक्रियाओं का उद्देश्य समाज में अपराध और संघर्ष को संबोधित करने के तरीके को बदलना है, जिससे न्याय के लिए अधिक दयालु और समावेशी दृष्टिकोण को बढ़ावा मिलता है।

पीड़ित–अपराधी सम्मेलन

पीड़ित–अपराधी कॉन्फ्रेंसिंग एक विशिष्ट और महत्वपूर्ण पुर्नस्थापनात्मक न्याय प्रक्रिया है जो किसी अपराध या संघर्ष के पीड़ित और अपराधी को एक सुविधाजनक बातचीत में शामिल होने के लिए एक साथ लाती है। इस प्रक्रिया का उद्देश्य अपराधी के कार्यों से होने वाले नुकसान को संबोधित करना, जवाबदेही को बढ़ावा देना और उपचार और सुलह की सुविधा प्रदान करना है। यहां पीड़ित–अपराधी कॉन्फ्रेंसिंग के प्रमुख तत्वों पर करीब से नजर डाली गई हैः

- **स्वैच्छिक भागीदारीः** पीड़ित–अपराधी सम्मेलन में भागीदारी आम तौर पर पीड़ित और अपराधी दोनों के लिए स्वैच्छिक होती है। दोनों पक्षों के पास यह निर्णय लेने का विकल्प है कि वे इस प्रक्रिया में शामिल होना चाहते हैं या नहीं।
- **सुगम संवादः** प्रशिक्षित सूत्रधार या मध्यस्थ इन सम्मेलनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे बातचीत के लिए एक सुरक्षित और संरचित वातावरण बनाते हैं। सूत्रधार यह सुनिश्चित करते हैं कि बातचीत सम्मानजनक रहे और नुकसान को संबोधित करने और समाधान खोजने पर केंद्रित रहे।
- **भावनाओं और जरूरतों को व्यक्त करनाः** सम्मेलन के दौरान, पीड़ित को अपनी भावनाओं को व्यक्त करने, अपने जीवन पर अपराध के प्रभाव का वर्णन करने और क्षतिपूर्ति, समापन, या निवारण के अन्य रूपों के लिए अपनी जरूरतों को व्यक्त करने का अवसर मिलता है। बदले में, अपराधी अपने कार्यों की जिम्मेदारी ले सकता है, पश्चाताप व्यक्त कर सकता है और अपने व्यवहार के परिणामों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकता है।
- **समझौता और क्षतिपूर्तिः** पीड़ित–अपराधी सम्मेलन का अंतिम लक्ष्य एक समझौते या योजना पर पहुंचना है जो अपराधी द्वारा किए गए नुकसान की भरपाई और मरम्मत के लिए उठाए जाने वाले कदमों की रूपरेखा तैयार करता है। इसमें पीड़ित को वित्तीय क्षतिपूर्ति, माफी, सामुदायिक सेवा, या दोनों पक्षों की विशिष्ट आवश्यकताओं और चिंताओं को संबोधित करने के उद्देश्य से अन्य कार्रवाइयां शामिल हो सकती हैं।
- **अनुवर्ती कार्रवाई और समर्थनः** सम्मेलन के बाद, यह सुनिश्चित करने के लिए अक्सर अनुवर्ती प्रक्रिया होती है कि सहमत कार्यों को पूरा किया जाता है। इस पूरे चरण में पीड़ित और अपराधी दोनों की मदद के लिए सहायता सेवाएँ प्रदान की जा सकती हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि समाधान प्रक्रिया सफल है।
- **समापन और सुलहः** पीड़ित–अपराधी सम्मेलन से पीड़ित के लिए समापन की भावना पैदा हो सकती है और अपराधी को

पुनर्वास और जवाबदेही की दिशा में ठोस कदम उठाने का अवसर मिल सकता है। कुछ मामलों में, इससे दोनों पक्षों के बीच सुलह भी हो सकती है।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि पीड़ित–अपराधी सम्मेलन सभी मामलों के लिए उपयुक्त नहीं है, और यह पारंपरिक आपराधिक न्याय प्रक्रियाओं को पूरी तरह से प्रतिस्थापित नहीं कर सकता है। यह अहिंसक या कम गंभीर अपराधों और ऐसे मामलों के लिए सबसे प्रभावी है जहां पीड़ित और अपराधी दोनों भाग लेने के इच्छुक हैं। हालाँकि, जब इसे सफलतापूर्वक लागू किया जाता है, तो यह पुनरावृत्ति को कम करने, पीड़ितों के लिए उपचार प्रदान करने और न्याय के लिए अधिक दयालु और पुर्नस्थापनात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकता है।

निष्कर्ष

अंत में, सर्किल सेंटेंसिंग अपराध और संघर्ष को संबोधित करने के लिए एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण के रूप में पुर्नस्थापनात्मक न्याय की गहन क्षमता का उदाहरण देता है। सामुदायिक भागीदारी, खुले संवाद और सांस्कृतिक संवेदनशीलता पर आधारित, यह प्रथा न्याय के दंडात्मक मॉडल का विकल्प प्रदान करती है। उपचार, सुलह और सर्वसम्मति से निर्णय लेने पर जोर देकर, सर्कल सेंटेंसिंग न केवल अपराधियों को उनके कार्यों के लिए जवाबदेह बनाती है बल्कि सभी प्रतिभागियों के बीच समझ और सहानुभूति को भी बढ़ावा देती है। यह उपचार और बहाली की प्रक्रिया में सामुदायिक समर्थन के महत्व और सांस्कृतिक पहचान के महत्व को रेखांकित करता है। जैसे–जैसे समाज दंडात्मक उपायों की सीमाओं को तेजी से पहचान रहा है, सर्किल सेंटेंसिंग अधिक दयालु, समावेशी, को बढ़ावा देने में पुर्नस्थापनात्मक न्याय की शक्ति के प्रमाण के रूप में खड़ा है। और न्याय के प्रति सामंजस्यपूर्ण दृष्टिकोण। स्वदेशी समुदायों में इसकी सफलता और व्यापक संदर्भों में इसकी बढ़ती स्वीकार्यता इस पुर्नस्थापनात्मक अभ्यास की सार्वभौमिक प्रासंगिकता और प्रभावशीलता को उजागर करती है।

संदर्भ

- मर्फी, जेजी (1988), ''क्षमा और आक्रोश'' में: मर्फी, जेजी और हैम्पटन, जे. (संस्करण), क्षमा और दया, कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
- एनआर चौधरी (2002), भारतीय जेल कानून और कैदियों का सुधार, नई दिल्लीः डीप एंड डीप प्रकाशन।
- नारायण हजारी और अमरेंद्र मोहंती (1990), इंडियन प्रिजन सिस्टम, नई दिल्लीः साउथ एशिया बुक्स।
- ओलिवर पी. रिचमंड, (2002), व्यवस्था बनाए रखना, शांति बनाना, न्यूयॉर्कः पालग्रेव मैकमिलन।
- पीडी शर्मा (1981), पुलिस, राजनीति और भारत में लोग, नई दिल्लीः उप्पल पब्लिशिंग हाउस।
- लुईस एलिसन, द एडवरसैरियल प्रोसेस एंड द वल्नरेबल विटनेस, न्यूयॉर्कः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2001।
- मैकफर्सन, सीबी (1962), द पॉलिटिकल थ्योरी ऑफ पॉजेसिव इंडिविजुअलिज्मः हॉब्स टू लॉक, लंदनः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।